**मार्च 2019**

**भाकृअनुप, केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के क्षेत्रीय केंद्र वडोदरा में एनएफडीबी प्रायोजित ' मछुयारों की आय दुगनी करने के लिए घेरे मे मछली पालन ' पर एक कौसल विकास ट्रेनिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया**  
भाकृअनुप, केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र ने राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (एनएफडीबी), हैदराबाद द्वारा प्रायोजित तीन दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन 28 फ़रवरी से 2 मार्च के दौरान "मछुयारों की आय दुगनी करने के लिए घेरे मे मछली पालन" विषय पर एपीएमसी हॉल, वडोदरा में किया। कौशल विकास कार्यक्रम अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी में हाल की प्रौद्योगिकियों के प्रयोग के लिए डिज़ाइन किया गया था जैसे कि अंतर्स्थलीय खुले पानी में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए पिंजरे और पेन के प्रयोग की तरह। कार्यक्रम में गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के विभिन्न जिलों के पचास किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह के दौरान, डॉ. एस. पी. कांबले, संस्थान के वडोदरा क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक-प्रभारी ने अपने स्वागत भाषण में देश में मछली उत्पादन का मुद्दा उठाया और अप्रयुक्त क्षमता के उपयोग के लिए पिंजरे का महत्व बताया। डॉ. सी. के. मिश्रा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीफा , आनंद इस अवसर के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि रहे और इस विषय के चयन के लिए संस्थान की प्रशंसा की, जो इस समय की आवश्यकता है। श्री एच.वी. मेहता, मत्स्य अधीक्षक, राजपीपला ने दर्शकों को सरकारी योजना और गुजरात में पिंजरे की खेती के लिए उपलब्ध सब्सिडी के बारे में बताया। डॉ. दिबाकर भक्त, संस्थान के वड़ोदरा केंद्र के वैज्ञानिक ने मध्यम और बड़े जलाशय (2.55 लाख हेक्टेयर), नदियों और नहरों (3865 किमी) और नदी के मुहाने (0.21 लाख) के रूप में गुजरात राज्य के संभावित अंतर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों पर प्रकाश डाला। और उन संसाधनों के मछली उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए घेरे में मत्स्य पालन के महत्व को समझाया। उन्होंने एक स्थायी तरीके से राज्य के अंतर्स्थलीय जल उत्पादन में वृद्धि के लिए पिंजरे और पेन कल्चर के माध्यम से स्टॉकिंग सामग्री के इन-सिटिंग पर जोर दिया। संस्थान के वडोदरा केंद्र के वैज्ञानिक श्री डब्ल्यू ए मीतेइ ने धन्यवाद ज्ञापन किया।  
  
कर्जन जलाशय में मछ्ली पालन स्थलों पर व्याख्यान और क्षेत्र की यात्रा के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम तीन दिनों तक जारी रहा। श्री मीतेई, वैशाख जी, दिबाकर भक्त और एस.पी. कांबले ने अंतर्स्थलीय खुले पानी में पिंजरे और पेन कल्चर जैसे विभिन्न पहलुओं पर एक सत्र में व्याख्यान प्रदान किया, अलग-अलग फिन और शेलफिश प्रजातियों के प्रबंधन और पर्यावरण और मछली स्वास्थ्य प्रबंधन संस्कृतियों (पिंजरे / कलम) के बारे में भी बताया । तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, प्रशिक्षुओं ने वैज्ञानिकों के साथ सक्रिय रूप से बातचीत की और भविष्य में इस तरह के प्रशिक्षण की अधिक संख्या का अनुरोध किया ताकि वे अंतर्स्थलीय खुले पानी के मत्स्य पालन के क्षेत्र में अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकें। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन प्रशिक्षण प्रमाण पत्र के वितरण के साथ हुआ , जिसके बाद संस्थान के वडोदरा के वैज्ञानिक श्री वैशाख जी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। डॉ. बि.के.दास, पाठ्यक्रम निदेशक और निदेशक, बैरकपुर ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए , कार्यक्रम के प्रायोजक एनएफडीबी , हैदराबाद के समर्थन, सुझाव, प्रोत्साहन को स्वीकार किया और साथ ही सभी संसाधन व्यक्तियों, प्रतिनिधियों और भाग लेने वाले सक्रिय मछुआरों को विशेष धन्यवाद दिया ।

**अप्रैल 2019**

**पूर्वी चंपारण, बिहार के रूली, मझरिया, सिरसा और कररिया मौन के मछली किसानों के लिए आद्रभूमि मत्स्य विकास और प्रबंधन पर एक्सपोजर तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम**

बिहार में पूर्वी चंपारण जिले के रूली, मजहरिया, सिरसा और कररिया मौन के मछली किसानों के लिए आद्रभूमि में मछली पालन, विकास और प्रबंधन पर पांच दिवसीय एनएफडीबी प्रायोजित एक्सपोजर तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन भाकृअनूप. केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान , बैरकपुर, ने 27 अप्रैल 2019 से 1 मई 2019 तक किया । संस्थान में 27 अप्रैल 2019 एक्सपोजर तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास (संयोजक) के मार्गदर्शन में किया गया था। डॉ. एम. ए. हसन, सह-संयोजक ने सभा का स्वागत किया और कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी और साथ ही बिहार के पूर्वी चंपारण जिले के मोतिहारी क्षेत्र में पाँच मौन पर चलाए जा रहे एनएफडीबी प्रायोजित आर्द्रभूमि विकास परियोजना के बारे में भी बताया। उन्होंने बिहार के मौन में आधारित मत्स्य पालन और परियोजना की पहल के बारे में जानकारी दी और उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि और मछुआरों की आय को दोगुना करने और अधिक आजीविका के अवसरों और रोजगार सृजन के बारे में बताया। डॉ. ए.के. दास, प्रधान वैज्ञानिक और प्रभारी, विस्तार और प्रशिक्षण कक्ष , भाकृअनूप. केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान , बैरकपुर ने मछुआरों को अपनी बढ़ी हुई आय का एक छोटा सा हिस्सा बचाने की वकालत की ताकि वे भविष्य में निवेश कर सकें और मछली उत्पादन अभी और संस्थान के माध्यम से एनएफडीबी द्वारा परियोजना और वित्तीय सहायता का कार्यकाल समाप्त हो जाने के बाद भी जारी रख सकें। उद्घाटन सत्र में, संस्थान के निदेशक, डॉ. बि.के. दास ने सभी भाग लेने वाले मौन मछुआरों के साथ बातचीत की और उन्हें उत्पादन में वृद्धि और उनकी आय दोगुनी करने की उनकी उपलब्धियों पर बधाई दी।आद्रभूमि में रोग प्रबंधन पर मछुआरों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने उन्हें रोग फैलने की अवधि के दौरान 1.5 किलोग्राम से अधिक की मछलियों की स्टॉक के दबाव को कम करने की सलाह दी अक्टूबर-नवंबर माह के समय जब रोग ज्यादा फैलता हैं और एंटीबायोटिक दवाओं के उपयोग से बचने के लिए वकालत की क्योंकि यह खुला जल पारिस्थितिकी तंत्र हैं ।मछुआरों ने विचार विमर्ष सत्र में परियोजनाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से प्राप्त सभी सहायता, तकनीकी हस्तक्षेप और ज्ञान के लिए संस्थान और एनएफडीबी को धन्यवाद दिया। उद्घाटन कार्यक्रम के बाद तकनीकी सत्र हुए।  
  
रूली, मझारिया, सिरसा और कररिया मौन के छत्तीस मछुआरे ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम का समन्वय श्री जी. चंद्रा और डॉ. सजिना एएम द्वारा किया जाता है और सुश्री एस. कुमारी, डॉ.आर. बैठा, श्री मिशाल, पी. सुश्री जी. कर्नाटक, डॉ. लियानथुमलिया और श्री एचएस स्वैन द्वारा समन्वित किया गया है।

**मई 2019**

**भाकृअनूप. केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान , बैरकपुर, में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए** **अभिविन्यास प्रशिक्षण**  
  
7-13 मई 2019 के दौरानभाकृअनूप. केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान , बैरकपुर में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश के कृषि विज्ञान के स्नातक स्तर के प्रथम वर्षीय छात्रों के लिए 7-दिवसीय उन्मुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में अठारह छात्रों ने हिस्सा लिया है। डॉ. बि.के.दास, संस्थान के निदेशक ने छात्रों का स्वागत करते हुए ग्रामीण भारत के जीवनयापन को सुनिश्चित करने के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य उत्पादन वृद्धि और प्रबंधन के महत्व पर विस्तार से बताया। छात्रों को फसल पालन, मत्स्य पालन और पशुपालन के एकीकरण के बारे में बताया गया। संस्थान के एफआरईएम डिवीजन के प्रमुख डॉ. बी. पी. मोहंती ने अंतर्स्थलीय खुले पानी में मत्स्य पालन बढ़ाने के के लिए पोषण और सुरक्षा के विकास पर अपनी चिंता व्यक्त की। छोटे स्वदेशी मछली प्रजातियों और उनके पोषण संबंधी पहलुओं को उनके द्वारा विस्तृत रूप से व्याख्या किया गया। डॉ. यू.के. सरकार,संस्थान के आरडब्ल्यूएफ डिवीजन के प्रमुख, ने जलवायु परिवर्तन के महत्व और अंतर्स्थलीय मत्स्य उत्पादन और उत्पादकता पर इसके प्रभाव के बारे में बताया। प्रशिक्षण मॉड्यूल में संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ मैदानी जल रसायन विज्ञान, जैव जीवों, विभिन्न मछली प्रजातियों की पहचान, सजावटी मछली संस्कृति पहलुओं, मछली रोगों की पहचान सहित क्षेत्रीय प्रदर्शन यात्राओं, फील्ड प्रदर्शनों और इन-हाउस क्लास इंटरैक्शन में फ़ीड सामग्री जिसमें एक्सट्रूज्ड पेलेटेड फीड्स, जीआईएस मैपिंग आदि विषय शामिल हैं। विचार विमर्श सत्र में अंतर्स्थलीय खुले जल मात्स्यिकी के मौजूदा पहलुओं और स्थानीय मछुआरों के सामने आने वाली समस्याएं शामिल थे। जीआईएस प्लेटफॉर्म के माध्यम से अंतर्स्थलीय जल निकायों के परिसीमन, तलछट पानी के लिमोनो-रसायन, नदियों के पारिस्थितिकीय तंत्र, मछलियों की पारिस्थितिकी तंत्र , जलाशयों और झीलों में मत्स्यपालन की वृद्धि, अंतर्स्थलीय जल में प्रदूषकों, मछली रोगों के नियंत्रण, खुले पानी में, शिल्प गियर्स, स्वास्थ्य भोजन के रूप में छोटे स्वदेशी मछलियों का महत्व, फ़ीड निर्माण, विपणन सहित सामाजिक-अर्थशास्त्र, और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए संचार कौशल का विकास के बारे में छात्रों के ज्ञान को समृद्ध करने के प्रयास किए गए। इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम से भारत के ग्रामीण अर्थव्यवस्था और स्वास्थ्य पहलुओं के उत्थान की दिशा में ठोस प्रयास के माध्यम से मत्स्य सहित कृषि के सभी पहलुओं के एकीकरण से छात्रों के लिए भविष्य का मार्ग विकसित होने की उम्मीद है।

**जून 2019**

**संस्थान ने मछुआरों की आय दोगुनी करने में मदद की**

संस्थान ने बिहार के पूर्वी चंपारण जिले में 14 से 15 जून, 2019 के दौरान कररिया और सिरसा मौन (मीठे पानी की नम भूमि) पर दो दिवसीय "फिश हार्वेस्ट मेला" का आयोजन किया। इस मेले का उद्घाटन माननीय पूर्व केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री और संसद सदस्य (लोक सभा) पूर्वी चंपारण श्री राधा मोहन सिंह ने किया। श्री सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि संस्थान द्वारा किए गए वैज्ञानिक हस्तक्षेपों के माध्यम से एनएफडीबी वित्त पोषित इस कार्यक्रम ने पूर्वी चंपारण जिले के पांच वेटलैंड के 800-900 मछुआरों के परिवारों को अपनी आय दोगुनी करने में सहायता की हैं।

डॉ. बि.के.दास, निदेशक, ने अपने स्वागत भाषण में संस्थान द्वारा कल्चर आधारित मात्स्यिकी में तकनीकी हस्तक्षेप के बारे में जानकारी दी। उन्होंने जोर देकर कहा कि मछली की उपज को दुगनी-तिगुनी करने के लिए संस्थान ने प्रबंधन किया, अर्थात कररिया मौन में 180 किलोग्राम / हेक्टेयर / वर्ष से लेकर लगभग 675 किलोग्राम / हेक्टेयर / वर्ष; सिरसा मौन में 190 किलोग्राम / हेक्टेयर / से 320 किलोग्राम / हेक्टेयर / वर्ष; रूली मौन में 70 किग्रा / हेक्टेयर / से 140 किग्रा / हेक्टेयर / माझारिया मौन में 60 किग्रा / हैक्टेयर / 120 किग्रा / हेक्टेयर । इसके अतिरिक्त, मछली पकड़ने वालों को भी मछली पकड़ने के दिनों में वृद्धि होने से लाभ हुआ है। कररिया मौन में 44 दिन से 151 दिन; सिरसा मौन में 32 दिन से 63 दिन; रूली मौन में 35 दिन से 62 दिन और मजहरिया मौन में 28 दिन से 60 दिन।

केंद्रीय क्षेत्र योजना (सीएसएस) नीली क्रांति के तहत बिहार के वेटलैंड मत्स्य विकास परियोजनाओं के कार्यक्रम को मछली की उपज के संबंध में बिहार के शोषित आर्द्रभूमि के इष्टतम दोहन में संस्थान द्वारा तकनीकी हस्तक्षेप का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया है। स्थानीय मछुआरों ने यह भी माना है कि इस तरह की योजना न केवल बेरोजगारी को कम करने में सक्षम थी, बल्कि नौकरियों की तलाश में युवाओं के शहरों की तरफ जाने की प्रवृति को उलटने में भी सक्षम थी । इस कार्यक्रम में 250 से अधिक मछुआरों ने भाग लिया।

डॉ. राजू बैठा, वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन किया ।

**जुलाई 2019**

**भाकृअनूप. केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान , बैरकपुर ने 10 जुलाई 2019 को राष्ट्रीय मछली किसान दिवस मनाया**

संस्थान ने हर साल की तरह 10 जुलाई 2019 को बैरकपुर स्थित अपने मुख्यालय में राष्ट्रीय मछली किसान दिवस मनाया। यह दिन प्रो. हीरालाल चौधरी द्वारा प्रेरित प्रजनन तकनीक की उनकी महान उपलब्धि के लिए सम्मानित करने के लिए मनाया जाता है। प्रो. चौधरी को इस तकनीक में उनके पथप्रदर्शक अनुसंधान के लिए देश में ’प्रेरित प्रजनन की तकनीक’ का जनक माना जाता है, जिसे भारत में प्रथम नीली क्रांति ’के मशाल वाहक के रूप में जाना जाता है। नदी में जैव विविधता को बनाए रखने और संरक्षित करने के उद्देश्य से गंगा नदी में भारतीय मेजर कार्प्स की अंगुलिमीनों को रिहा करके इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। इस कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, ओडिशा और मध्य प्रदेश के 100 से अधिक मछली किसानों, उद्यमी और मछली उत्पादन समूहों का जमावड़ा देखा गया। सभी के बीच आठ किसानों को देश के अंतर्स्थलीय मत्स्य विकास में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए संस्थान द्वारा सर्वश्रेष्ठ मछली किसान पुरस्कार भी मिला। श्री बंकिम हाजरा, माननीय विधायक, सागर द्वीप, डॉ. वी. वी. सुगनान, पूर्व सहायक उपमहानिदेशक (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी ),आईसीएआर, डॉ. मधुमिता मुखर्जी, सहायक निदेशक (तकनीकी), पश्चिम बंगाल सरकार और डॉ. बी. सी. झा, पूर्व प्रभागाध्यक्ष आरडब्ल्यूएफ डिवीजन, ने इस अवसर पर आभार व्यक्त किया। श्री बंकिम हाजरा ने संस्थान की गतिविधियों को विस्तार से बताया और संस्थान द्वारा देश के दूरस्थ कोनों की सेवा के लिए की गई पहल के लिए निदेशक और संस्थान के सदस्यों की प्रशंसा की। डॉ. वी. वी. सुगुनन ने अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्र की संभावनाओं और चुनौतियों और संस्थान द्वारा खाद्य और पोषण सुरक्षा प्राप्त करने में निभाई गई भूमिका पर जोर दिया। डॉ. मधुमिता मुखर्जी ने भविष्य में मछली की जैव विविधता और प्रजातियों के विविधीकरण के संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, झारखंड के 150 से अधिक किसानों ने भाग लिया। संस्थान द्वारा पांच विभिन्न राज्यों के आठ मछली किसानों को "सर्वश्रेष्ठ मछली किसान पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। इस समारोह के बाद मछुआरों और वैज्ञानिकों के बीच विचार विमर्श सत्र आयोजित किया गया, जिसमें विशेषज्ञों ने अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्रों की संभावनाओं और समस्याओं पर चर्चा की और वर्तमान संदर्भ में इन चुनौतियों को कम करने का तरीका बताया।

**अगस्त 2019**

**मधुबनी के मछुयारों की आय को दोगुनी करने के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर कौशल विकास कार्यक्रम - एक दृष्टिकोण**

आत्मा , मधुबनी, बिहार द्वारा प्रायोजित कौशल विकास कार्यक्रम 31 अगस्त से 04 सितंबर, 2019 के दौरान भाकृअनुप. केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुरके मुख्यालयमें मधुबनी के बाईस किसानों की सक्षम भागीदारी से आयोजित किया गया। अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर 5-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ. बि . के. दास, द्वारा किया गया, और आपने उद्घाटन भाषण में उन्होने किसानों के कौशल में सुधार और विकास के साथ अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर अपनी आजीविका हासिल करने के अलावा जलीय कृषि और मत्स्य पालन के माध्यम से न्यूटरी - स्मार्ट गांवों को विकसित करने के लिए अनुप्राणित किया। 46 लाख से अधिक की आबादी वाले मधुबनी में, मौन और चौर के साथ साथ बारहमासी और मौसमी जल निकाय हैं, जहां मछली पालन और जलीय कृषि के विकास के माध्यम से आजीविका सुधार की पर्याप्त गुंजाइश बनी हुई है। इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम, अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के प्रति किसानों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को विकसित करने के लक्ष्य से आयोजित किए जाते हैं। यह कार्यक्रम किसानों के व्यावहारिक कौशल को देखते हुए खुले मैदानों, मौन , चौर, तालाबों आदि में मछली के उत्पादन को बढ़ाने के लिए उन्मुख किया गया। प्रोफेसर ए. पी. शर्मा, संस्थान के पूर्व निदेशक और वर्तमान रजिस्ट्रार, जीबीपीयूएटी (GBPUAT), पंतनगर ने अपने उद्घाटन भाषण में किसानों से आग्रह किया कि वे प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त ज्ञान को संबंधित क्षेत्रों में लागू करें ताकि इस तरह के प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान का समझदारी के साथ उपयोग किया जा सके। डॉ. बी. पी. मोहंती, एफआरईएम (FREM) डिवीजन के प्रधानध्यक्ष ने लघु उद्योगों से मधुबनी के आसपास के क्षेत्रों में न्यूटरी -स्मार्ट गाँव विकसित करने के लिए किसानों को उत्साहित किया । गणेश चतुर्थी के अवसर पर शाम के समय सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रशिक्षुओं को भी शामिल किया गया। कार्यक्रम का समापन किसानों और वैज्ञानिकों के बीच विचार-विमर्श सत्र के साथ हुआ , जिसके बाद प्रतिभागियों से प्रतिक्रिया भी प्राप्त की गई।

**सितंबर 2019**

**संस्थान में कौशल विकास कार्यक्रम के माध्यम से आय वृद्धि के लिए मुजफ्फरपुर के ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षित किया गया**

अंतर्स्थलीय मत्स्य कृषि क्षेत्र और संबद्ध क्षेत्रों पर निर्भर ग्रामीण आबादी की आय को दोगुनी करने का विषय विशेष महत्वपूर्ण है। इस पृष्ठभूमि में संस्थान ने बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के ग्रामीण युवाओं के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर एक सप्ताह तक चलने वाले कौशल विकास और क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया। बैरकपुर स्थित संस्थान मुख्यालय में 13 से 19 सितंबर 2019 के दौरान कार्यक्रम में कुल 30 ग्रामीण युवाओं ने भाग लिया। उन्हें अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया है जैसे, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, फ़ीड प्रबंधन, प्राकृतिक मछली खाद्य जीव, जल गुणवत्ता प्रबंधन, तालाब प्रबंधन, सजावटी मछली पालन आदि। इसके अलावा, व्यावहारिक सत्रों में पानी की गुणवत्ता विश्लेषण, फ़ीड तैयारी, और मछली रोगज़नक़ों की पहचान और बायोटिक समुदायों का विश्लेषण का भी प्रशिक्षण दिया गया । उनके लिए रिसर्कुलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस) और हैचरी यूनिट की एक एक्सपोजर यात्रा की भी व्यवस्था की गई थी। उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत कोलकाता के ईस्ट कोलकाता आद्रभूमि ,आईसीएआर-सीफा, कल्याणी, बालाग्रह, नैहाटी मछली बीज फार्म और गैलिफ स्ट्रीट में सजावटी मछली बाजार का भी दौरा किया। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने युवाओं को संबोधित करते हुए उन्हे मत्स्य पालन से संबंधित आय सृजन और लाभकारी गतिविधियों में संलग्न होने के लिए प्रेरित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्रतिभागियों को कुशल मत्स्य प्रबंधन के माध्यम से अपनी पारिवारिक आय बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त होने की उम्मीद है।

|  |
| --- |
| **एक दिवसीय हिंदी वैज्ञानिक कार्यशाला “अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी : संरक्षण, संवर्धन एवं जीविकोपार्जन” का आयोजन** |
|  |

आज दिनांक 13 सितम्बर 2019 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता, एवं इंडियन साइंस कांग्रेस एसोसिएशन, कोलकाता के संयुक्त तत्वाधान में हिंदी सप्ताह एवं हिंदी कार्यशाला “अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी : संरक्षण, संवर्धन एवं जीविकोपार्जन” विषय पर बैरकपुर, कोलकाता में आयोजित की गयी । हिंदी सप्ताह एवं कार्यशाला का शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं सम्मानित अतिथियो द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया ।  
  
कार्यक्रम की शुरुआत डॉ उत्तम कुमार सरकार, प्रभागाध्यक्ष, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने स्वागत भाषण के साथ किया । डॉ सरकार ने हिंदी सप्ताह के दौरान हो रहे विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी साथ ही साथ राजभाषा हिंदी में संस्थान द्वारा किये जा रहे प्रयासों के बारे में बताया । सम्मानित अतिथि डॉ (श्रीमती) विजयालक्ष्मी सक्सेना, महाध्यक्ष (निर्वाचित), इंडियन साइंस कांग्रेस, कोलकाता ने अपने संबोधन में संस्थान के निदेशक एवं अन्य अधिकारिओ को हिंदी में इस बड़े स्तर पर कार्यशाला आयोजित करने के लिए भूरी भूरी प्रशंसा की । उन्होंने हिंदी सप्ताह के संयुक्त आयोजन के लिए संस्थान को धन्यवाद दिया ।  
  
सम्मानित अतिथि डॉ मनोज कुमार चक्रवर्ती, पूर्व महाध्यक्ष, इंडियन साइंस कांग्रेस, कोलकाता ने अपने संबोधन में संस्थान के निदेशक एवं अन्य अधिकारिओ को हिंदी सप्ताह के संयुक्त आयोजन के लिए धन्यवाद दिया । उन्होंने आशा जताई कि मछुआरो की आय दुगुनी करने में यह कार्यशाला महती भूमिका निभाएगा ।  
  
मुख्य अतिथि डॉ बसंत कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने अपने संबोधन में इस कार्यशाला के उद्देश्य एवं लक्ष्य के बारे में सभी प्रतिभागियो को अवगत कराया । उन्होंने सम्मानित अतिथियो को बताया कि इस कार्यशाला के लिए 65 शोध पत्र प्राप्त हुए है जो अपने में एक रिकॉर्ड है। इन 65 शोध पत्रों को दो ग्रंथो के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है । उन्होंने भारत के विभिन्न भागो में मत्स्यपालको के जीवनयापन की स्थितिओ की चर्चा की और उम्मीद जताया की संस्थान के प्रयासों से मछुआरो के वर्तमान स्थिति में निश्चित रूप से सुधार होंगे ।  
  
अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ अशोक कुमार सक्सेना, पूर्व महाध्यक्ष, इंडियन साइंस कांग्रेस, कोलकाता ने हिंदी सप्ताह के महत्व पर प्रकाश डाला । उन्होंने कहा की इस कार्यशाला से विशेषकर मछली पालको की आय दुगुनी करने के प्रयासो को एक बल मिलेगा । उन्होंने अपने संबोधन में संस्थान द्वारा बड़ी मात्रा में चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों को एक अच्छी पहल बताया और कहा की इससे मछली पालको में उधमिता विकास करने में सहायता मिलेगी । उन्होंने आशा व्यक्त किया कि इस तरह के प्रयासों से अधिक से अधिक किसान एवं मछली पालक लाभान्वित होंगे । डॉ सक्सेना ने बताया की 108 भारतीय विज्ञानं कांग्रेस जो 3-7 जनवरी 2021 में होने वाली है के दौरान मात्स्यिकी पर एक सत्र आयोजित किया जायेगा ।  
  
इस अवसर पर प्रोफेसर रणजीत कुमार वर्मा, पूर्व कोषाध्‍यक्ष, डॉ. एस. रामकृष्‍ण, महासचिव (सदस्‍यता कार्य), इंडियन साइंस कांग्रेस, कोलकाता ने भी अपने विचार व्यक्त किये ।  
  
इस अवसर पर तीन पुस्तकों का विमोचन किया गया :

 अंतर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों पर जलवायु परिवर्तन प्रभाव का विश्लेषण

 मात्स्यिकी संवर्धन हेतु प्रौधोगिकिया एवं आजीविका सुरक्षा , एवं

 अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी का संरक्षण – समस्याए और संभावनाए  
  
अंत में धन्यवाद ज्ञापन, इंडियन साइंस कांग्रेस की ओर से प्रो शिव सत्य प्रकाश, कोषाध्यक्ष एवं संस्थान की ओर से डॉ श्रीकांत सामंत, सर्वकार्यभारी अधिकारी (हिंदी) द्वारा किया गया ।  
  
कार्यशाला के दो सत्रों में विभिन्न विषयो पर पैंसठ से अधिक वैज्ञानिक, शोधकर्मी, और हितधारको ने अपने विचारों/कार्यों को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किये और मात्स्यिकी तथा मछुआरो के लिए नई दिशायों की संभावनायों पर विचार-विमर्श किया । एक सौ से ज्यादा प्रतिभागियो ने इस कार्यशाला में भाग लेकर अपना योगदान किया ।  
  
इस कार्यशाला के आयोजक डॉ बी के दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, है, और इसके संयोजक श्रीकांत सामंत, प्रवीण मौर्य, संजीव कुमार साहू, गणेश चन्द्र, सुमन कुमारी, और मो कासिम है ।  
  
हिंदी सप्ताह के अवसर पर दिनांक 13 सितम्बर से 19 सितम्बर 2019 तक विभिन्न कार्यकर्मो जैसे कविता पाठ, निबंध लेखन, हिंदी कार्य समीक्षा, क्विज प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जायेगा ।

**अक्टूबर 2019**

**सीतामढ़ी, बिहार के किसानों के लिए संस्थान में क्षमता निर्माण प्रशिक्षण के माध्यम से ज्ञान को मजबूत करना**

24-30 सितंबर, 2019 को सीतामढ़ी, बिहार के किसानों के लिए ज्ञान और कौशल विकास के लिए 7 दिनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" विषय पर किया गया, जिसका उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने किया। कार्यक्रम में कुल 30 मछुआरों ने भाग लिया। सीतामढ़ी जिले के मछुआरों और मछली पालकों की आवश्यकतायों को ध्यान में रखते हुए, विशाल बारहमासी और मौसमी तालाबों की नहरों , और गंगा की घाटी के चरों में अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के विकास के माध्यम से आजीविका सुधार के लिए , इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के प्रति किसानों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण में सुधार लाना इस कार्यक्रम का उद्देश्य था । कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए, डॉ. बि .के. दास ने ग्रामीण भारत में गरीबी और कुपोषण को खत्म करने के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर मछली किसानों के कौशल विकास की आवश्यकता पर बल दिया और उनकी आजीविका सुनिश्चित की। उन्होंने मत्स्य पालन में उद्यमशीलता के अवसरों के बारे में भी बताया जो बेहतर विपणन और व्यावसायिक कौशल के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकता है। उन्होंने प्रशिक्षुओं के साथ भी बातचीत की और उन्हें अपने मूल स्थान पर वापस जाने के बाद साथी किसानों के बीच प्रशिक्षण सत्रों से एकत्रित ज्ञान को प्रसारित करने के लिए कहा। प्रशिक्षण सत्रों में चार दिनों के कार्यक्रम में इन-हाउस व्याख्यान के साथ पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि (ईकेडब्ल्यू) में ऑन-फील्ड एक्सपोज़र विज़िट,सजावटी मछली बाजार, कोलकाता; सीफा क्षेत्रीय केंद्र, कल्याणी, मथुरा बील में पेन कल्चर, कमलगच्छी, बालागढ़, हुगली जिले में प्रगतिशील मछुआरों की नर्सरी सहित नैहाटी मछली बाजार का दौरा करवाया गया । प्रशिक्षण कार्यक्रम में अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर सत्र शामिल थे जिनमें जल और मिट्टी रसायन विज्ञान, मछली की प्रेरित प्रजनन, मछली उत्पादन, विपणन, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, आर्द्रभूमि प्रबंधन, सजावटी मछली पालन,केज कल्चर, मछली फ़ीड तैयार करना, केज के भंडार के लिए फिर से परिसंचरण कल्चर प्रणाली शामिल हैं। कार्यक्रम का अंत प्रशिक्षुओं के ज्ञान परीक्षण से और संस्थान के भविष्य के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार के लिए उनसे प्रतिक्रिया संग्रह करके हुआ ।

**दिसम्बर 2019**

**संस्थान ने "किसान की आय में वृद्धि के लिए अंतर्स्थलीय संवर्धित मछलियों का मछली स्वास्थ्य प्रबंधन" पर (राज्य मत्स्य अधिकारियों / तकनीकी कर्मचारियों / उद्यमियों / एनजीओ / प्रगतिशील किसानों के लिए, 2 - 6 दिसंबर, 2019) पांच दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया।**

संस्थान ने राष्ट्रीय मत्स्य पालन विकास बोर्ड (एनएफडीबी), हैदराबाद द्वारा प्रायोजित 02 - 06 दिसंबर, 2019 के दौरान पांच दिवसीय प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम (टीओटी) आयोजित किया। डॉ. बि. के. दास, निदेशक के मार्गदर्शन में "अंतर्स्थलीय संवर्धित मछलियों के लिए मछली का स्वास्थ्य प्रबंधन" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । डॉ. बि. के. बेहरा, प्रधान वैज्ञानिक,डॉ. ए. के. बेरा द्वारा यह कार्यक्रम समन्वित किया गया था।डॉ. राजू बैठा और सुश्री एम. शैया देवी, वैज्ञानिक कार्यक्रम के संचालक थे। इस कार्यक्रम में राज्य के मत्स्य पालन विभाग से कुल 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें छत्तीसगढ़ के पांच, हरियाणा के तीन, मध्य प्रदेश, बिहार के दो और तेलंगाना के दो; पश्चिम बंगाल के तीन उद्यमी और संस्थान के आठ रिसर्च स्कॉलर शामिल थे । प्रशिक्षण कार्यक्रम अंतर्स्थलीय मछलियों की उभरती हुई मछलियों और रोगों के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करता है, साथ ही पारंपरिक और उन्नत नैदानिक ​​दृष्टिकोण जिसमें प्रतिरक्षाविज्ञानी और आणविक निदान और नियंत्रण और उपचार प्रबंधन और मछली स्वास्थ्य प्रबंधन में जलीय पर्यावरण की भूमिका शामिल है। बाड़े की संस्कृति और जलाशय में पर्यावरण-स्वास्थ्य प्रबंधन पाठ्यक्रम में शामिल थे। मछली पालन में बेहतर प्रबंधन प्रथाओं के साथ मृदा और जल रसायन विज्ञान और व्यावहारिक संग्रह पर अधिक जोर दिया गया, मछली रोग का निदान और दवाओं और रसायनों के निवारक और उपचारात्मक उपयोग के लिए संरक्षण भी सिखाया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत, पश्चिम बंगाल पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, कोलकाता के डॉ. टी. जे. अब्राहम और डॉ. गदाधर दास ने जीवाणु, परजीवी और फंगल रोगों और संस्कृति मछलियों में उनके नियंत्रण और उपचार के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम के वैध सत्र में भाग लेते हुए, डॉ . यू.के. सरकार, संस्थान के प्रभारी निदेशक, ने मछली उत्पादन और जलवायु परिवर्तन के संबंध में मछली रोगों और प्रबंधन के क्षेत्र स्तर के निदान के महत्व पर बल दिया। उन्होंने आय को दोगुना करने के लिए कृषि उत्पादन में सुधार के साथ मछली पालन के बेहतर प्रबंधन प्रथाओं को लागू करने के लिए अधिकारियों को सलाह दी।

**अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के माध्यम से बिहार के सारण जिले के मछुआरों का क्षमता निर्माण**

ग्रामीण आबादी की आय में वृद्धि के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्र के महत्व को समझते हुए, संस्थान ने बैरकपुर में 03 से 09 दिसंबर, 2019 के दौरान बिहार के सारण जिले के मछुआरों के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर एक सप्ताह तक चलने वाले कौशल विकास और क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में कुल 29 मछुआरों ने भाग लिया। उन्हें अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया है जैसे कि, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, फ़ीड प्रबंधन, प्राकृतिक मछली खाद्य जीव, जल गुणवत्ता प्रबंधन, नर्सरी प्रबंधन, समग्र मछली संस्कृति, ताजे पानी की झींगा संस्कृति, सजावटी मछली संस्कृति आदि इसके अलावा, व्यावहारिक सत्रों में पानी की गुणवत्ता विश्लेषण, चारा तैयार करने और मछली रोगज़नक़ों की पहचान और जैविक समुदायों के विश्लेषण की व्यवस्था की गई थी। उनके लिए रि-सर्कुलर एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस) और हैचरी यूनिट की एक्सपोजर विजिट की भी व्यवस्था की गई थी। उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम के हिस्से के रूप में नैहाटी बीज फार्म, पूर्वी कोलकाता वेटलैंड, आईसीएआर-सीफा, कल्याणी, खामरगच्छी और आईसीएआर-सीआईएफई, साल्ट लेक सेंटर का भी दौरा किया। वैध सत्र में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए, संस्थान के वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को मत्स्य पालन से संबंधित आय सृजन और लाभकारी गतिविधियों में संलग्न करने के लिए जोर दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रतिभागियों के मूल्यांकन की आवश्यकता के साथ शुरू किया गया था और यह भविष्य के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में और सुधार के लिए एक प्रतिक्रिया सत्र के साथ समाप्त हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्रतिभागियों को कुशल मत्स्य प्रबंधन के माध्यम से अपनी पारिवारिक आय बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त होने की उम्मीद है।